International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 9, September 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मगध साम्राज्य का उत्कर्ष: सामरिक भूगोल, लौह-तकनीक और राजनैतिक एकीकरण का एक बहु-आयामी पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ० प्रीतम कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर

प्राचीन इतिहास विभाग

काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ज्ञानपुर,भदोही ।

सारांश :

प्रस्तुत शोध-पत्र ईसा पूर्व छठी शताब्दी के उत्तर भारत में मगध के एक सर्वशक्तिमान साम्राज्य के रूप में उभरने की प्रक्रिया का विस्तृत विश्लेषण करता है। जहाँ समकालीन 15 महाजनपद आपसी संघर्ष में अपनी शक्ति क्षीण कर रहे थे, वहीं मगध ने अपनी भौगोलिक अभेद्यता और प्राकृतिक संसाधनों के कुशल प्रबंधन से एक स्थायी सत्ता स्थापित की। यह शोध विशेष रूप से राजगीर की किलेबंदी, लौह उपकरणों के सामरिक महत्व और गंगा घाटी के कृषि अधिशेष के अंतर्संबंधों की पड़ताल करता है।

कीवर्ड्स (Keywords) :

महाजनपद काल, सामरिक भूगोल, साइक्लोपियन वॉल, लौह अयस्क, गज-सेना, बिम्बिसार, अजातशत्रु, द्वितीय नगरीकरण, साम्राज्यवादी अर्थतंत्र, पंच-मार्क सिक्के।

प्रस्तावना :

उत्तर भारत का इतिहास बुद्ध के युग (6वीं शताब्दी ईसा पूर्व) से कबीलाई ढांचे को छोड़कर क्षेत्रीय राज्यों की ओर बढ़ा। इस कालखंड को इतिहास में 'द्वितीय नगरीकरण' के नाम से जाना जाता है। 16 महाजनपदों के उदय ने भारत में प्रथम बार एक संगठित राजनैतिक चेतना को जन्म दिया। इन राज्यों में कोसल, वत्स और अवंती जैसे शक्तिशाली प्रतिद्वंद्वियों को पछाड़कर मगध का नेतृत्व में आना केवल एक राजनैतिक घटना नहीं, बल्कि एक आर्थिक और सामरिक क्रांति थी। इस शोध का उद्देश्य उन कारकों को उद्घाटित करना है जिन्होंने मगध को 'अखिल भारतीय साम्राज्य' का केंद्र बनाया।

भौगोलिक सामरिकता और रक्षात्मक ढांचा

मगध की सुरक्षा उसके भूगोल में निहित थी। इसकी दोनों राजधानियाँ सैन्य दृष्टि से अभेद्य मानी जाती थीं :

1. राजगृह: पर्वतीय चक्रव्यूह

राजगृह (गिरिव्रज) पाँच पहाड़ियों—विपुलगिरि, रत्नागिरि, उदयगिरि, स्वर्णगिरि और व्यवहारगिरि—से घिरा हुआ था।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 9, September 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

- **साइक्लोपियन वॉल :** पुरातात्विक खुदाई में प्राप्त यह 40 किमी लंबी दीवार विशाल पत्थरों से बनी थी। इसमें किसी जुड़ाव पदार्थ का प्रयोग नहीं था, फिर भी यह हज़ारों वर्षों से टिकी है। यह दीवार शत्रु की पैदल और अश्व सेना के लिए एक अभेद्य बाधा थी।

2. पाटलिपुत्र: जल-दुर्ग की अवधारणा

उदयिन द्वारा स्थापित पाटलिपुत्र 'गंगा, सोन और गंडक' के संगम पर स्थित था। इसे 'जल-दुर्ग' कहा गया क्योंकि इसके चारों ओर प्राकृतिक जल-खाइयाँ थीं। नदियों ने न केवल सुरक्षा प्रदान की, बल्कि मगध की नौसेना को पूर्व और उत्तर की ओर विस्तार करने का मार्ग भी दिया।

प्राकृतिक संसाधन और लौह-क्रान्ति

मगध की विजय का सबसे बड़ा तकनीकी कारण 'लौह अयस्क' पर उसका नियंत्रण था।

- **लौह खदानें :** मगध का अधिकार गया और वर्तमान झारखंड की लौह खदानों पर था। इससे प्राप्त उत्तम कोटि के लोहे से ऐसे हथियार बनाए गए जो ताँबे या काँसे के हथियारों से कहीं अधिक घातक थे।
- **सैन्य नवाचार :** अजातशत्रु ने वैशाली के विरुद्ध युद्ध में 'रथमूसल' (एक ऐसा रथ जिसमें गदा घूमती थी) और 'महाशिलाकंटक' (पत्थर फेंकने वाली विशाल मशीन) का प्रयोग किया। यह प्राचीन काल का 'टैंक और मिसाइल' तंत्र था।
- **गज-सेना:** मगध प्रथम राज्य था जिसने युद्ध में हाथियों का व्यवस्थित प्रयोग किया। हाथियों ने शत्रु के किलों के द्वार तोड़ने और सेना में भगदड़ मचाने में निर्णायक भूमिका निभाई।

आर्थिक आधार: कृषि अधिशेष और राजस्व प्रबंधन

साम्राज्यवादी विस्तार के लिए एक विशाल राजकोष की आवश्यकता थी, जिसे मगध ने निम्नलिखित रूप में प्राप्त किया :

- **धान की रोपाई तकनीक :** गंगा के उपजाऊ मैदानों में 'धान की रोपाई' ने उत्पादन को कई गुना बढ़ा दिया। अधिशेष उत्पादन ने एक बड़े गैर-कृषि वर्ग (सैनिक और अधिकारी) के भरण-पोषण को संभव बनाया।
- **व्यापारिक मार्ग :** मगध का नियंत्रण 'उत्तरापथ' पर था, जिससे टैक्स (शुल्क) और व्यापारिक लाभ बढ़ा।
- **आहत सिक्के :** व्यापार में वस्तु-विनिमय के स्थान पर चांदी के सिक्कों के प्रयोग ने अर्थव्यवस्था को गति दी, जिससे सेना को नकद वेतन देना संभव हुआ।

राजनैतिक नेतृत्व : कूटनीति और विस्तारवाद

मगध को एक के बाद एक महात्वाकांक्षी शासक मिले, जिन्होंने 'साम-दाम-दंड-भेद' का अनुसरण किया :

- **बिम्बिसार (हर्यक वंश) :** इसने वैवाहिक संबंधों (कोसल, वैशाली, मद्र) के माध्यम से अपनी सीमाओं को सुरक्षित किया और 'अंग' को जीतकर व्यापारिक मार्ग नियंत्रित किए।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 9, September 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

- **अजातशत्रु :** इसने कूटनीति से वज्जी संघ में फूट डाली और 16 वर्षों के संघर्ष के बाद विजय प्राप्त की।
- **नंद वंश :** महापद्मनंद ने 'सर्वक्षत्रान्तक' की उपाधि धारण की और प्रथम बार विंध्य पर्वत के दक्षिण तक साम्राज्य का विस्तार किया। नन्दों के पास 2 लाख पैदल, 20 हज़ार अश्वारोही और 3 हज़ार हाथियों की विशाल सेना थी।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः, मगध का उत्कर्ष भूगोल, तकनीक और कूटनीति का एक दुर्लभ समन्वय था। लोहे की खदानों ने अस्त्र दिए, गंगा की मिट्टी ने धन दिया और पहाड़ियों ने सुरक्षा दी। मगध द्वारा स्थापित यह प्रशासनिक और सैन्य ढांचा ही वह आधार था जिस पर आगे चलकर मौर्यों ने 'अखंड भारत' का निर्माण किया। यह शोध यह स्थापित करता है कि मगध का उदय भारतीय इतिहास में कबीलाई संस्कृति के अंत और एक संगठित राष्ट्र के उदय का प्रतीक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. शास्त्री, के.ए. नीलकंठ: Age of the Nandas and Mauryas।
2. शर्मा, आर.एस.: Material Culture and Social Formations in Ancient India।
3. रायचौधरी, एच.सी.: Political History of Ancient India।
4. थापर, रोमिला: भारत का इतिहास (600 ई.पू. - 300 ई.स्वी.)।
5. कोशाम्बी, डी.डी.: एन इंट्रोडक्शन टू द स्टडी ऑफ इंडियन हिस्ट्री।
6. सिंह, उपिंदर: A History of Ancient and Early Medieval India।
7. ASI रिपोर्ट: राजगीर एवं पाटलिपुत्र उत्खनन विवरण।